International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-09-2019; Accepted: 15-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 33-34

असम के उजापालि नृत्य का संक्षिप्त परिचय

परीक्षित नाथ
शोधार्थी, एम.फिल, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय, भारत

प्रस्तावना

अनेकता में एकता भारतवर्ष की मुख्य विशेषताओं में से एक रही है। भारतवर्ष में विभिन्न जाति, उपजाति, जनजाति, विभिन्न धर्मावलंबी, विभिन्न भाषा-भाषी के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। यही विशेषता भारतवर्ष को दुनिया के सभी देशों से अलग और विशेष बनाती है। यह देश सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी बहुरंगी व बहुआयामी है।

भारतवर्ष के पूर्वोत्तर में स्थित असम राज्य इन्हीं सारी विशेषताओं को साथ लेकर चलने वाला भारतवर्ष का एक ऐसा राज्य है, जहां पर अनेकों जातियां, उपजातियां, जनजातियां, विभिन्न धर्म, संस्कृति, मान्यता, परंपराएं, विश्वास, बोली, भाषाएं स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती हैं। इन सभी विविधताओं के बावजूद भी इस राज्य में शांति और भाईचारा कायम है। यहां के लोग प्रेम और सद्भावना में विश्वास रखते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी यह राज्य मिलन और प्रेम का प्रतीक माना जाता है, जिसका उदाहरण हमें कामरूप ग्राम्य में स्थित हाजो क्षेत्र से मिल जाता है, जहां पर मुसलमानों के पोवामक्का, हिंदूओं के हयग्रीव माधव मंदिर और सिखों के गुरुद्वारा हैं।

असम राज्य जाति-जनजातियों का एक समन्वय क्षेत्र है। यहां की जाति-जनजातियां कई समूहों में विभाजित हैं। भिन्न-भिन्न जाति-जनजातियों के भिन्न-भिन्न संस्कृतियां, मान्यताएं , परंपराएं हैं तथा इन सभी जाति-जनजातियों का लोक साहित्य एवं लोक नृत्य भी एक दूसरे से भिन्न है। यहां की जातियों में ब्राह्मण, कायस्थ, योगी आदि मुख्य है। जनजातियों में आहोम, बोड़ो, राभा, तिवा, कार्बी, मिसींग, ताइ, ताइ फाके, कुकी, मरान, मटक, डिमासा, सूतिया, हाजोंग, चाय जनजाति, खासी, गारो आदि प्रमुख हैं। इन सभी जाति-जनजातियों तथा धर्मों के बहुरंगी परंपराओं और मान्यताओं को मिलाकर असम की इंद्रधनुषी असमिया संस्कृति का निर्माण हुआ है।

असम भिन्न भिन्न जाति-जनजातियों का निवास क्षेत्र होने के कारण यहाँ लोक नृत्य तथा शास्त्रीय नृत्य का बहुरंगी रूप देखने को मिलता है। यहां के शास्त्रीय नृत्यों में से सत्रिया नृत्य, भोरटाल नृत्य, उजापालि नृत्य, माटी आखरा, सूत्रधारी नृत्य, रास नृत्य, देवदासी नृत्य आदि प्रमुख हैं, दूसरी ओर लोकनृत्यों में से बिहू नृत्य, बागुरुम्बा (बोडो जनजाति), झुमुर नृत्य (चाय जनजाति), बहुवा नृत्य (सोनोवाल कछारी), भारीगान नृत्य (राभा जनजाति), हाचाकेकान नृत्य (मिकिर जनजाति), कार्लेक किकान नृत्य (डिमोरिया कार्बी जनजाति), चोमांकान नृत्य (कार्बी जनजाति), बरतर नृत्य (तिवा जनजाति), गुमराग (मिसिंग जनजाति), फात्री नृत्य (डिमाचा जनजाति), कालीचंडी नृत्य (गोवालपरीया समूह), ज्योन व नृत्य (टांगछा जनजाति) आदि प्रमुख है। यह सभी अलग अलग नृत्य भिन्न भिन्न अवसरों पर प्रदर्शित किये जाते है।

उजापालि नृत्य असम का एक परंपरागत लोक नृत्य है। यह नृत्य प्राचीनकाल से ही असम में प्रचलित होता आया है। उजापालि नृत्य का जन्म भारतीय संगीत परंपरा से हुआ है। इस नृत्य का उद्भव और विकास के संदर्भ में असम में विभिन्न जनश्रुतियों का प्रचलन है। कहा जाता है कि जब अर्जुन बृहन्नला के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे थे, तब वे इस कला को स्वर्ग से धरती तक लाए थे। कुछ मान्यताएं इस प्रकार की भी हैं कि पारिजात नामक एक महिला ने सपनों में ही इस कला को सीखा और उसने अपने शिष्यों को इस कला का ज्ञान दिया। कुछ विद्वानों के अनुसार बियाह कला और केंद्र कला नामक दोनों व्यक्ति ही उजापालि के जनक हैं। उजापालि नृत्य असम में प्राचीन काल से ही प्रचलित है। इसका उल्लेख हमें तेरहवीं सदी के विशिष्ट पंडित वेदाचार्य के 'स्मृति रत्नाकर', असम की ताम्र लिपि, 'गुरु चरित कथा' तथा असम के वैष्णव युग के विभिन्न साहित्य पर मिल जाता है।

उजापालि नृत्य महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के पूर्व से ही असम में प्रचलित होता आया है। शंकरदेव ने भी पहले पहल अपना उपदेश व वाणी को उजापालि नृत्य के द्वारा ही लोगों तक पहुंचाने का काम किया था। बाद में शंकरदेव ने उजापालि नृत्य को सत्रिया नृत्य के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में समाहित कर लिया। उजापालि नृत्य असम की एक अर्धनाटकीय नृत्यकला है। यह नृत्य सामूहिक रूप से प्रदर्शित किया जाता है। इस नृत्य के द्वारा महाभारत व रामायण आदि कथाओं की व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। उजापालि नृत्य में उजा और पालि दोनों पात्र गद्य और पद्य दोनों के माध्यम से विषयवस्तु व कहानी व आख्यान को लोगों के सामने रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उजापालि को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है- महाकाव्य सम्बंधी उजापालि और महाकाव्यतेर उजापालि। महाकाव्य सम्बंधी उजापालि के अंतर्गत व्यास उजापालि, पांचाली उजापालि, डुलरी उजापालि, नगंवा उजापालि, भाइरा उजापालि, दुर्गावली उजापालि, सत्रिया उजापालि, दामोदरी सत्र उजापालि आदि। महाकाव्यतेर उजापालि के अंतर्गत सुकनानी उजापालि, विषहरी उजापालि, पद्मपुराण गान, मारेगान, झुनागीत अथवा करीगीत, तुकुरिया उजापालि, राखोवाल उजापालि, आपी उजापालि अथवा लिकिरी उजापालि आदि है। इसमें नृत्यगीत को उजा नामक पात्र सूर और राग प्रारंभ कर देते हैं फिर पालि नामक पात्रों के सहयोग से आगे बढ़ते हैं। उजापालि में उजा मुख्य होता हैं, जो गीत व राग की शुरुआत करता है तथा पालि समूह के सहयोग से नृत्यगीत संपूर्ण होता है। महाकाव्य सम्बंधी उजापालि के अंतर्गत सत्रिया उजापालि आते हैं, जो सत्रिया नृत्य का एक मुख्य भाग माना जाता है। उजापालि के अंतर्गत इस प्रकार के सभी विभाजन तथ्यपरक हैं। वर्तमान समय में सुकनानी उजापालि और रामायण व सभागोवा उजापालि ही जीवित व सक्रिय हैं। असम के कामरूप जिले में रामायण गाने वाले उजा को सभागोवा कहा जाता है। दूसरी तरफ दरंग जिला में प्रचलित पद्मपुराण के गीत-पद गाने वाले उजा को सुकनानी उजा कहा जाता है। उजापालि के गीत-पद, विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए महाकाव्य गुण समृद्ध उजापालि को वैष्णव प्रदर्शन कला और महाकाव्यतेर उजापालि को शाक्त प्रदर्शन कला भी कहा जाता है। महाकाव्य सम्बंधी उजापालि के अंतर्गत रामायण, महाभारत तथा पुराण के गीत, पद को गाते हैं और महाकाव्यतेर उजापालि शाक्त देवी पूजा तथा मनसा देवी की आराधना करके पद्म पुराण के गीत पद से मनसा देवी को वंदना करते हैं, तथा चांदो सदागर, बेउला-लखिन्दा कहानी को विविध सुर-ताल के साथ गाते हैं।

'उजापालि' यह पद दो शब्दों के योग से बना है, उजा और पालि। 'उजा' शब्द संस्कृत का शब्द 'उपाध्याय' से आया है तथा 'पालि' शब्द का प्रचलन भी असमिया समाज में है, जिसका अर्थ है- सहायक। उजापालि नृत्य में गीत-पद आदि गानेवाले उजा की सहायता करनेवाले को ही पालि कहा जाता है। पालि

विभिन्न प्रकार के होते हैं- डाइना पालि, गोर पालि एवं आग पालि इत्यादि।
उजापालि नृत्य में उजा और पालि के माथे पर सफेद पगड़ी बंधी होती है, यह पगड़ी नाव के सदृश होती है। दोनों पैरों में पायल बांधी जाती है, कान में कुंडल तथा पैरों तक सफेद कुर्ता और कमर में एक चादर विशेष शैली में बांधी जाती है तथा शरीर पर सफेद वस्त्र (चेलेंग,चादर) धारण करते हैं, माथे पर चंदन का तिलक लगाया जाता है। पालि के दोनों हाथों में कटोरे के समान ताल (वाद्ययंत्र) होता है। इस प्रकार की उजापालि को व्यास या वियाह उजापालि कहा जाता है। व्यास उजापालि को वैष्णव उजापालि भी कहा जाता है। विष्णु पूजा, वासुदेव पूजा आदि में गीत-पद गाकर व्यास उजापालि ही प्रदर्शन करते हैं। व्यास उजापालि के गीत-पद की विषयवस्तु रामायण, महाभारत से संबंधित है।
उजापालि नृत्य गीत में वाद्ययंत्रों का विशेष प्रचलन है। उजापालि गीत में विशेष स्वर, ताल, पद तथा वाद्ययंत्रों का प्रयोग देखा जाता है। इस नृत्य का प्रारम्भ एक विशेष राग से होता है, उसके बाद गुरु वंदना, विष्णुपद, संगीतालाप और उसके बाद झूना व जूना व पूवली गीत अथवा पूवेली गीत से संपन्न होता है। इस नृत्य के प्रारम्भ में एक विशेष राग से गणपति, सदाशिव, महामाया, कृष्ण और गंधर्व से आशीर्वाद लिया जाता है। इस वंदना में भी विशेष शब्दों का प्रयोग देखा जाता है, जैसे- हा-र अर्थात गणपति, ता-र अर्थात सदाशिव, ना-र अर्थात महामाया, रि-र अर्थात कृष्ण, रिता-र अर्थात गंधर्व। इस राग-वंदना के बाद गुरु वंदना की जाती है। उजापालि नृत्य गुरुमुखी विद्या है, जिसके कारण इसके गीत पर नृत्य के प्रारंभ के पूर्व गुरु की वंदना की जाती है। गुरु की वंदना सिंधुरा अथवा रामगिरी या गुन्जरी या भ्रमरी राग में नृत्य सहित गाया जाता है। गुरु वंदना से ही उजापालि संगीत की शुरुआत होती है, इसलिए इसको पातनी गीत भी कहा जाता है। गुरु वंदना एक श्लोक से आरंभ होता है-

" श्री कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नंदनाय च।
नंद गोप कुमारय गोविंदाय नमो नमः॥"

इस श्लोक के बाद कई वंदना गीत गाए जा सकते हैं। वंदना गीत- सारंग, सुसारंग देशाग, रामगिरी, धनश्री आदि राग के किसी भी एक या दो राग में गाया जा सकता है। इस गीत की ताल 'लेछारी' या 'जिकरि' होती है। जिकरि ताल का एक वंदना गीत इस प्रकार है-

"अहे गोविंद कि दीबो यादव राय।
अहे ब्राह्मणडर भीतरे जत वस्तु आछे
समस्ते तोमाते पाय॥
पद: किबा आसन दिबो नारायण
गड़ुरे जार बाहन।
किबा अलंकार रंजीबो तोमारे
कौस्तभे जार भूषण ॥.....
कृष्णर चरण हृदये धरिया
दीन माधव दासे गाय"

सामग्र रूप में 'आलाप' (राग), 'गुरु वंदना' और 'पातनि गीत' इन तीनों गीतों के समाहार को ही गुरुमंडली या गईद या धुन्नी कहा जाता है।
नृत्य, वेशभूषा, संलाप व कथोपकथन और मुद्रा उजापालि के चार मुख्य अंग हैं। उजापालि नृत्य में भारतीय शास्त्रीय तथा परंपरागत नृत्य शैली की विशेषताएं अंतर्निहित हैं। उजापालि नृत्य का प्रभाव असम के अनेक नृत्यों में दृष्टिगोचर होता है। व्यास उजापालि नृत्य से ही सत्रिया उजापालि नृत्य का विकास हुआ है, जो नृत्य श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रचारित हुआ था।
जीवन की 64 कलाओं में से साहित्य, संगीत और नृत्य कलाओं का एक समन्वय रूप का नाम ही उजापालि है। असम में प्राक शंकरी युग से ही परंपरागत रूप में उजापालि प्रचलित होते आया है। यह नृत्य असम का एक अमूल्य एवं महत्वपूर्ण नृत्य है। ऐसा नहीं है कि इस नृत्य को एक धर्म या जाति विशेष के लोगों ने ही जीवित रखा हुआ है, बल्कि परशु शेख उजा धर्म में मुसलमान थे जबकि उजापालि और देउधनी नृत्य के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उजापालि नृत्य को प्रदर्शित करने वाली प्रथम महिला का नाम हाफ़ेजा बेगम है। इसप्रकार उजापालि नृत्य को जीवित रखने में असम के सभी लोगों का योगदान रहा है। अंत में यह कहा जा सकता है कि उजापालि नृत्य असम के ही नहीं बल्कि भारतवर्ष का एक अमूल्य एवं महत्वपूर्ण लोकनृत्य हैं। इस प्रकार उजा पालि नृत्य भारतीय लोक नृत्य में एक विशेष महत्व रखता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, नबीन चन्द्र, भारतर उत्तर पूर्वाञ्चलर परिवेश्य कला,शराइघाट फोटोटाइप्स लिमिटेड, गुवाहाटी
2. शर्मा, सत्येंद्र, असमियार साहित्यर समीक्षात्मक इतिबृत्त,सौमार प्रकाश,गुवाहाटी
3. हाकाचाम,उपेन राभा,असमिया आरु असमर जाति-जनगोष्ठी: प्रसंग-अनुसंग,किरण प्रकाशन,धेमाजी
4. सं.भट्टाचार्य, प्रमोदचन्द्र, असमर जनजाति, किरण प्रकाशन, धेमाजी
5. इंटरनेट, विकिपीडिया